संस्थापित १८६७ ई.

आर्यमित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १३० ● : अंक ०५ ● ३० जनवरी २०२५ (गुरुवार) माघ शुक्लपक्ष प्रतिपदा सम्वत् २०८१ ● दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्:१६६०८५३१२५

प्रयाग कुम्भ में महर्षि दयानन्द का धर्मचक्र-प्रवर्तन

-प्रो०भवानीलाल भारतीय

काशी से प्रस्थान कर मिर्जापुर होते हुए माघ शुक्ला ५ शनिवार १९२६ विक्रमी (५ फरवरी १८७०) को स्वामी दयानन्द प्रयाग आये ! उस समय वहां पर माघी कुम्भ की धूम थी! वे वासुकि मन्दिर में ठहरे! उनके आगमन का समाचार सर्वत्र फैल गया और अनेक लोग उनसे भेंट करने तथा धर्मोपदेश ग्रहण करने के लिए आने लगे! मिर्जापुर निवासी संस्कृतज्ञ विद्वान पंडित मोतीराम एक दिन अपने एक विद्यार्थी सहित स्वामी जी से भेंट करने प्रातः ४:०० बजे ही उस स्थान पर पहुंचे, जहां कौपीन मात्र वस्त्र धारण किए परमहंस जी दिगम्बर अवस्था में घोर शीत की परवाह किए बिना घाट के बुर्ज पर निश्चित सो रहे थे ! उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि माघ मास की घोर शीत में यह व्यक्ति इस प्रकार खुले में लेटा है ! पंडित मोतीराम के छात्र ने स्वामी जी के दर्शन काशी शास्त्रार्थ के समय किए थे! इसलिए उसने महाराज को पहचान लिया और अपने गुरु से कहने लगा कि यही वह गपाष्टक बाबा है जिसने काशी में पंडितों से शास्त्रार्थ किया था!

(आठ गप्पों का खण्डन करने के लिए स्वामी दयानन्द को अज्ञानीजन गपाष्टक बाबा के नाम से पुकारने लगे थे!)

कुम्भ जैसे धार्मिक मेलों की उपयोगिता स्वामी दयानन्द के लिए इतनी ही थी कि वे ऐसे अवसरों पर जहां बृहद मानव समुदाय के समक्ष अपने विचारों को सशक्त ढंग से प्रस्तुत कर सकते थे, वहां उन्हें हिन्दू जाति के साथ संन्यासियों, वैरागियों तथा धर्माचार्यों के आचार-विचारों तथा क्रियाकलापों को निकट से देखने का अवसर भी प्राप्त हो जाता था! भारत का यह बैरागी समुदाय अपने आप को निवृत्ति मार्गी कहता है! यह दूसरी बात है कि निवृत्ति पथ के पथिक इन्हीं साधु सन्तों और महन्तों के पास विशाल

धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य तथा वैभव के प्रतीक मठ, मन्दिर तथा विराट धर्म संस्थान भी हैं! उनका सारा समय इसी सम्पत्ति की देखरेख तथा व्यवस्था में जाता है तथा परलोक तथा परमार्थ की चर्चा भी उनके होठों से कभी नहीं उतरती! स्वामी दयानन्द इस कथनी और करनी के अन्तर को घोर पाखंड समझते थे! कुंभ के उस मेले में स्वामी दयानन्द की भेंट एक ऐसे ही निवृत्ति मार्ग का उपदेश करने वाले साधु से हुई! वार्ता के प्रसंग में स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि एकांतिक निवृत्ति मार्ग मनुष्य की उन्नति में बाधक है! दूसरों को सांसारिक दायित्व से मुंह मोड़ने की शिक्षा देने वाले ये तथाकथित निवृत्तिमार्गी स्वयं घर-घर भीख मांग कर उदर पूर्ति करते हैं,क्या यह विडम्बना नहीं है ? स्वामी जी के विचारानुसार वैदिक धर्म मनुष्य को भाग्यवादी, अकर्मण्य तथा पलायनवादी नहीं बनाता! वेद मन्त्रों में तो सर्वत्र कर्मनिष्ठा, पुरुषार्थ तथा कठिनाइयों से जूझने की प्रेरणा ही मिलती है! इस धार्मिक मेले में स्वामी जी ने चक्रांकित मतानुयायी वैष्णव मत के बाह्याचार की समालोचना की!

मेले में काशी शास्त्रार्थ के प्रतिपक्षी स्वामी विशुद्धानन्द और उनके गुरु भाई हाथरस निवासी पंडित हरजस राय नामक एक विद्वान भी आए थे! पंडित हरजस राय अक्सर अपने विद्यार्थियों से कहते रहते थे कि स्वामी दयानन्द अलग बैठे बैठे ही मूर्तिपूजा का खण्डन करते रहते हैं! यदि वे मेरे समक्ष आएं तो उनकी बोलती बन्द हो जाएगी! जब स्वामी जी को पंडित जी की यह आत्माश्लाघापूर्ण उक्ति कर्णगोचर हुई तो उन्होंने पंडित हरजस राय और स्वामी विशुद्धानन्द दोनों को ही शास्त्र चर्चा के लिए आमंत्रित किया, परन्तु ये वाक् शूर पंडित सामने नहीं आए!

कुम्भ के इस समागम में आदि ब्रह्मसमाज के नेता श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर उस समय प्रयाग में उपस्थित थे ! स्वामी जी की लोकविश्रुत कीर्ति को सुनकर वे दर्शनार्थ सेवा में उपस्थित हुए! पारस्परिक परिचय के अनन्तर विचारों का आदान-प्रदान हुआ! स्वामी जी अब तक अनुभव करने लगे थे कि एक ओर जहां मूर्तिपूजा,अवतारवाद तथा अन्य सांप्रदायिक धारणाओं का खण्डन आवश्यक है वहां वेद पर आधारित विशुद्ध आर्य धर्म के वास्तविक रूप का लोगों को परिज्ञान कराया जाना भी आवश्यक है! जब तक वेदों में व्याख्यातृ धर्म के मौलिक उदात्त स्वरूप को जन सामान्य के समक्ष उपस्थित नहीं किया जाएगा तब तक समाज और राष्ट्र के अभ्युत्थान का कार्य सम्भव नहीं होगा! इसी तथ्य को अनुभव कर स्वामी जी ने वैदिक पाठशाला की स्थापना विषयक चर्चा ठाकुर महाशय से की! एक ऐसा ही प्रस्ताव वे काशी निवास काल में भी कर चुके थे! देवेन्द्रनाथ ठाकुर का मत स्वामी जी से बहुत कुछ मिलता था! जैसा कि हम देखते हैं ठाकुर महाशय ब्रह्मसमाज में भी वेदों और उपनिषदों पर आधारित धर्म एवं उपासना प्रणाली के प्रचार-प्रचार के ही इच्छुक थे! अतः उन्होंने स्वामी जी के विचारों से पूर्ण सहमति व्यक्त की तथा उन्हें कोलकाता आने का निमंत्रण दिया! ताकि वहां पर वेद विद्यालय विषयक चर्चा को आगे बढ़ाया जा सके!

स्वामी दयानन्द बराबर इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते थे कि लोग सदाचारी बनें ! अपने दुर्व्यसनों को त्याग कर सदा सरल तथा गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करें! वस्तुतः हिन्दू जाति के सार्वत्रिक पतन का एक कारण यह भी था कि विगत काल में विदेश से आने वाली संस्कृतियों और जीवन पद्धतियों का विषाक्त प्रभाव उस पर पड़ता रहा! स्वदेश की गरिमा तथा स्वजाति और स्वधर्म की अस्मिता को भुलाकर जब इस देश

क्रमशः.....६ पर

वेदामृतम्

प्रभो जनस्य वृत्रहन्, समर्येषु ब्रवावहै।
शूरो यो गोषु गच्छति, सखा सुशेवो अद्वयुः।। साम ६४९

हे मेरे इन्द्र राजा ! हे त्रिलोकी के कण-कण में आत्मा बनकर विराजमान परमात्मन् ! आप 'प्रभु' हैं, समर्थ हैं, अपने रचे नियमों के अनुसार सब-कुछ कर सकने का सामर्थ्य रखते हैं। यह तो हम मानव ही हैं, जो पग-पग पर ठोकरें खाते हैं, करना कुछ चाहते हैं, कर कुछ जाते हैं, रचना कुछ चाहते हैं, रच कुछ जाते हैं बनना कुछ चाहते हैं, वन कुछ जाते हैं। जब हम स्वयं को सब दृष्टियों से असमर्थ पाते हैं, तव आपका 'प्रभु'-रूप हमें और भी अधिक आकृष्ट करता है। है प्रभो! आप 'वृत्रहा' हैं। जैसे सूर्य अवरोधक मेघ-रूप या अन्धकार-रूप वृत्रका संहार कर देता है, वैसे ही आप साधक के मार्ग में आनेवाले व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रान्तिदर्शन आदि चित्त-विक्षेप-रूप विघ्नों को तथा उनके सहकारी दुःख, दौर्मनस्य' आदि को नष्ट करते हैं। आप ही सदाचार-पथ के विघ्न-भूत पाप-रूप वृत्रों का विध्वंस करते हैं।

है इन्द्र ! आप शूर हैं। आपसे शत्रुता करने और युद्ध करने का साहस तो किसी में है ही नहीं, पर आपके भक्त से भी यदि कोई शत्रुता ठानता है और युद्ध करता है तो अपने भक्त की सहायता करने आप तुरन्त युद्धभूमि में पहुँच जाते हैं और अपनी शूरता प्रकट करते हैं। हे मेरे प्रभु! जब-जब में असुरों से घिर जाऊँ तब-तव आप दौड़कर मेरे पास पहुँच जाएँ। मन के अन्दर छिड़े हुए तथा वाहर होनेवाले देवासुर संग्रामों में आप मुझे विजय के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन देते रहें। मैं और आप मिलकर ऐसा विजय-घोष करें कि शत्रु के दिल दहल जाएँ और वे मैदान छोड़कर भाग खड़े हों।

हे राजाधिराज ! हे भक्तवत्सल ! आप हमारे सच्चे 'सखा' हैं, जो हमारा साथ कभी नहीं छोड़ते । विपत्ति और सम्पत्ति दोनों अवस्थाओं में आप सखित्व का निर्वाह करते हैं। हे शरणागत-परिपालक ! आप 'सुशेत्र' हैं, शुभ सुख के दाता है। सुख के दाता तो संसार में बहुत है, पर जिस सुख को वे देते हैं वह हमारे लिए परिणाम में शुभ ही हो, यह आवश्यक नहीं है। पर आप स्वयं देख लेते हैं कि कौन-सा सुख शुभ है और कौन-सा अशुभ। शुभ सुख ही आप हमें देते हैं। हे भगवन् ! आप 'अद्वय' हैं, अद्वितीय हैं। आपके समकोटि का ही जगत् में कोई नहीं है, तो फिर आपसे उत्कृष्ट तो क्या ही होगा। साथ ही आप द्विविध आचरण से भी रहित है, अन्दर और बाहर एक-समान है। ऊपर से हित-चिन्तक बनना और अन्दर कटुता रखना, यह आपका स्वभाव नहीं है। है प्रभु ! सखा बनकर हमारी बाँह पकड़िये और हमें कृतार्थ कीजिए। साभार-वेदमंजरी

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपनी समाजों के चित्र एवं दशांश शुल्क आदि यथाशीघ्र आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में अवश्य जमा कर दें। प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को चित्र प्रेषित किये जा चुके हैं, परन्तु प्राप्त न होने की स्थिति में सभा कार्यालय के दूरभाष नम्बर-०५२२-२२८६३२८ पर सूचित करने का कष्ट करें ताकि चित्र पुनः भेजे जा सकें।

पंकज जायसवाल, मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

आस्था के सैलाब में श्रद्धा बलिदान

प्रयागराज के महाकुम्भ में अमृत स्नान के मुहुर्त को लेकर पुण्य व मोक्ष पाने की होड़ में उमड़े करोड़ों श्रद्धालुओं के सैलाब में मची भगदड़ में काफी श्रद्धालु घायल हो गये और कई काल के गाल में समा गये। शासन प्रशासन द्वारा चाकचौबन्द व्यवस्था किये जाने के बावजूद आखिर कई जिन्दगियाँ मौत के मुंह में समा गयीं। सन् १६५४ में जब देश की आबादी ४० करोड़ के लगभग थी तब भी कुम्भ में हुई भगदड में सैकड़ों श्रद्धालु काल-कवलित हो गये थे। इसके पश्चात् सन् २०१३ में भी प्रयागराज रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ में काफी जान-माल का नुकसान हुआ था।

अमृत-स्नान को लेकर पहले धर्म गुरूओं ने संगम स्नान को लेकर तरह तरह की भविष्यवाणियाँ की फिर उमड़ते जन सैलाब व घटनाओं को देखकर जहाँ गंगा वहीं स्नान करने की घोषणा करने लगे। मोक्ष और धर्म के ज्ञान से अनभिज्ञ साधारण लोग इन धर्मगुरू के वचनों व अन्ध श्रद्धा के कारण बलिदान हो गये। किसी बहन का भाई, तो किसी परिवार का सहारा तो किसी का पूरा परिवार ही उजड़ गया। घायलों का उपचार अलग चल रहा है। शरीर के अंग खो चुके या अंग विहीन हो चुके लोगों का शेष जीवन महाकुम्भ का एक दुःखद व व भयावह तश्वीर लिए सदैव डराता रहेगा। आखिर हम इन धर्म गुरूओं के अन्ध भक्त कबतक बने रहेंगे जो न धर्म को जानते हैं, न मोक्ष को, ईश्वर की तो बात ही क्या। मठाधीशों, वैरागियों, महन्तों आदि की विशाल धन सम्पत्ति व ऐश्वर्य आदि का लोभ परलोक व परमार्थ से कोसों दूर हैं। पहले मेलों आदि की उपयोगिता लोगों के मेल मिलाप व वैचारिक ज्ञान की चर्चा के लिए होती थी। अब उसके अर्थ ही बदल गये हैं। स्थान विशेष से मोक्ष की प्रप्ति एक विडम्बना ही है जिसे पाने के लिए सब लालायित है।

ज्ञान का सागर अपार है, परन्तु अज्ञानी बने रहने से काम नहीं चलता। पहले जानने की कोशिश करना चाहिए फिर विश्वास करना उचित होगा। अन्ध विश्वास तो गड्डे में गिरा देगा। यदि बुद्धि विवेक नहीं तो सैकड़ों ठग गुरू के रूप में मिलेंगे और लूटते रहेंगे। उन्होंने मनमानी भावनायें और कपोल कल्पित धारणायें गढ़ रखीं हैं जो साधारण आदमी को मननशील और ज्ञानी नहीं बनने देते। वे भेड़ बनाकर अपने पीछे चला रहे हैं इन सबसे बचने का एक ही रास्ता है जो लगभग १५० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बताया था वैदिक मार्ग। यजुर्वेद ११/७७ इस सम्बन्ध में स्पष्ट कहता है-

दृष्ट्वारूपे व्याकरोत सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धमनृते दधाच्छ्धा ँ सतयेप्रजापतिः।।

अर्थात् ईश्वर ने सर्वज्ञता के फलस्वरूप सत्य और असत्य में स्पष्ट भेद कर दिया है और मनुष्य को आज्ञा दी है कि ज्ञान प्राप्त करके सत्य में श्रद्धा करो और असत्य में अश्रद्धा करो। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जो चीज उसको प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सच मालुम होती है उसको मानने के लिए विवश हो जाता है। वही मनुष्य झूठी बातों पर विश्वास कर लेता है जो आलस्य और प्रमाद के कारण सत्य की खोज नहीं कर पाता। ठग लोग ज्ञान और विवेक की अवहेलना करके अन्ध विश्वास पर इसी कारण जोर देते हैं कि मूर्ख व अज्ञानी लोग उनके वश में रहे। उनमें तर्क बुद्धि का विकास हो गया तो वे उनके पंजे से निकल जायेंगे।

वेद हमें तर्क शक्ति देता है और आर्य समाज इसी वेद रूपी तर्क शक्ति का पालन करता है। अर्थात् पहले जानों फिर मानो। झूठे मत पन्थी कहते हैं मानो और लुटते रहो, जानो मत।

आज शिक्षित समझदार लोग पाखंड व अन्धविश्वास के जाल में फँस कर धन व समय आदि लुटा रहे हैं जो बड़े दुःख का विषय है। वेदों की शरण में आये बिना मनुष्य जाति का कल्याण असम्भव है। मनु महाराज सत्य ही कहते हैं।

अर्थ कामेष्व सक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मम् जिज्ञासमानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।

-सम्पादक

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

१४५-ऐ नबी क्यों हराम करता है उस वस्तु को कि हलाल किया है खुदा ने तेरे लिये. चाहता है तू प्रसन्नता बीबियों अपनी की, और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। जल्दी है मालिक उस का जो वह तुम को छोड़ दे तो यह है कि उस को तुम से अच्छी मुसलमान और ईमान वालियां बीबियां बदल दे सेवा करने वालियां तोबाः करने वालियां भक्ति करने वालियां रोजा रखने बालियां पुरुष देखी हुई और बिन देखी हुई।।

-मं० ७। सि० २८। सू० ६६। आ० १।५।।

(समीक्षक) ध्यान देकर देखना चाहिये कि खुदा क्या हुआ मुहम्मद साहेब के घर का भीतरी और बाहरी प्रबन्ध करने वाला भृत्य ठहरा!! प्रथम आयत पर दो कहानियां हैं एक तो यह कि मुहम्मद साहेब को शहद का शर्बत प्रिय था। उन की कई बीबियां थीं उन में से एक के घर पीने में देर लगी तो दूसरियों को असह्य प्रतीत हुआ उन के कहने सुनने के पीछे मुहम्मद साहेब सौगन्ध खा गये कि हम न पीवेंगे। दूसरी यह कि उनकी कई बीबियों में से एक की बारी थी। उसके यहां रात्री को गये तो वह न थी, अपने बाप के यहां गई थी। मुहम्मद साहेब ने एक लौंडी अर्थात् दासी को बुला कर पवित्र किया। जब बीबी को इस की खबर मिली तो अप्रसन्न हो गई। तब मुहम्मद साहेब ने सौगन्ध खाई कि मैं ऐसा न करूँगा। और बीबी से भी कह दिया तुम किसी से यह बात मत कहना। बीबी ने स्वीकार किया कि न कहूँगी। फिर उन्होंने दूसरी बीबी से जा कहा। इस पर यह आयत खुदा ने उतारी जिस वस्तु को हम ने तेरे पर हलाल किया उस को तू हराम क्यों करता है?' बुद्धिमान् लोग विचारें कि भला कहीं खुदा भी किसी के घर का निमटेरा करता फिरता है? और मुहम्मद साहेब के तो आचरण इन बातों से प्रकट ही हैं क्योंकि जो अनेक स्त्रियों को रक्खे वह ईश्वर का भक्त वा पैगम्बर कैसे हो सके ? और जो एक स्त्री का पक्षपात से अपमान करे और दूसरी का मान्य करे वह पक्षपाती होकर अधर्मी क्यों नहीं और जो बहुत सी स्त्रियों से भी सन्तुष्ट न होकर बाँदियों के साथ फंसे उस की लज्जा, भय और धर्म कहां से रहे? किसी ने कहा है कि-

'कामातुराणां न भयं न लज्जा'।

जो कामी मनुष्य हैं उन को अधर्म से भय वा लज्जा नहीं होती। और इन का खुदा भी मुहम्मद साहेब की स्त्रियों और पैगम्बर के झगड़े का फैसला करने में जानो सरपंच बना है। अब बुद्धिमान् लोग विचार लें कि यह कुरान विद्वान् वा ईश्वरकृत है वा किसी अविद्वान् मतलबसिन्धु का बनाया ? स्पष्ट विदित हो जाएगा और दूसरी आयत से प्रतीत होता है कि मुहम्मद साहेब से उन की कोई बीबी अप्रसन्न हो गई होगी, उस पर खुदा ने यह आयत उतार कर उस को धमकाया होगा कि यदि तू गड़बड़ करेगी और मुहम्मद साहेब तुझे छोड़ देंगे तो उन को उन का खुदा तुझ से अच्छी बीबियां देगा कि जो पुरुष से न मिली हों। जिस मनुष्य को तनिक सी बुद्धि है वह विचार ले सकता है कि ये खुदा वुदा के काम हैं वा अपना प्रयोजन सिद्धि के ! ऐसी-ऐसी बातों से ठीक सिद्ध है कि खुदा कोई नहीं कहता था केवल देशकाल देखकर अपने प्रयोजन सिद्ध होने के लिए खुदा की तर्फ से मुहम्मद साहेब कह देते थे। जो लोग खुदा ही की तर्फ लगाते हैं उन को हम सब क्या, सब बुद्धिमान् यही कहेंगे कि खुदा क्या ठहरा मानो मुहम्मद साहेब के लिये बीबियां लाने वाला नाई ठहरा!।।१४५।।

१४६-ऐ नबी झगड़ा कर काफिरों और गुप्त शत्रुओं से और सख्ती कर ऊपर उन के।।

- मं० ७। सि० २८। सू० ६६। आ० ९।।

(समीक्षक) देखिये मुसलमानों के खुदा की लीला! अन्य मत वालों से लड़ने के लिये पैगम्बर और मुसलमानों को उचकाता है इसीलिये मुसलमान लोग उपद्रव करने में प्रवृत्त रहते हैं। परमात्मा मुसलमानों पर कृपादृष्टि करे जिस से ये लोग उपद्रव करना छोड़ के सब से मित्रता से वर्ते।। १४६ ।।

१४७-फट जावेगा आसमान, बस वह उस दिन सुस्त होगा। और फरिश्ते होंगे ऊपर किनारों उसके और उठावेंगे तख्त मालिक तेरे का ऊपर अपने उस दिन आउ जन। उस दिन सामने लाये जाओगे तुम, न छिपी रहेगी कोई बात छिपी हुई। बस जो कोई दिया गया कर्मपत्र अपना बीच दाहिने हाथ अपने के, बस कहेगा लो पढ़ो कर्मपत्र मेरा। और जो कोई दिया गया कर्मपत्र बीच बांये हाथ अपने के, बस कहेगा हाथ न दिया गया होता मैं कर्मपत्र अपना।

- मं० ७। सि० २९। सू० ६९। आ० १६।१७। १८। १९। २५।

(समीक्षक) वाह क्या फिलासफी और न्याय की बात है। भला आकाश भी कभी फट सकता है? क्या वह वस्त्र के समान है जो फट जावे ? यदि ऊपर के लोक को आसमान कहते हैं तो यह बात विद्या से विरुद्ध है। अब कुरान का खुदा शरीरधारी होने में कुछ संदिग्ध न रहा। क्योंकि तख्त पर बैठना, आठ कहारों से उठवाना विना मूर्तिमान् के कुछ भी नहीं हो सकता? और सामने वा पीछे भी आना-जाना मूर्तिमान् ही का हो सकता है। जब वह मूर्तिमान् है तो एकदेशी होने से सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् नहीं हो सकता और सब जीवों के सब कर्मों को कभी नहीं जान सकता। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पुण्यात्माओं के दाहिने हाथ में पत्र देना, बचवाना, बहिश्त में भेजना और पापात्माओं के बायें हाथ में कर्मपत्र का देना, नरक में भेजना, कर्मपत्र बांच के न्याय करना! भला यह व्यवहार सर्वज्ञ का हो सकता है? कदापि नहीं। यह सब लीला लड़केपन की है।।१४७।।

१४८-चढ़ते हैं फरिश्ते और रूह तर्फ उस की वह अजाब होगा बीच उस दिन के कि है परिमाण उस का पचास हजार वर्ष ॥ जब कि निकलेंगे कबरों में से दौड़ते हुए मानो कि वह बुतों के स्थानों की ओर दौड़ते हैं।

- मं० ७। सि० २९। सू० ७०। आ० ४।४३।।

(समीक्षक) यदि पचास हजार वर्ष दिन का परिमाण है तो पचास हजार वर्ष की रात्रि क्यों नहीं? यदि उतनी बड़ी रात्रि नहीं है तो उतना बड़ा दिन कभी नहीं हो सकता। क्या पचास हजार वर्षों तक खुदा फरिश्ते और कर्मपत्र वाले खड़े वा बैठे अथवा जागते ही रहेंगे? यदि ऐसा है तो सब रोगी हो कर पुनः मर ही जायेंगे। क्या कबरों से निकल कर खुदा की कचहरी की ओर दौड़ेंगे? उन के पास सम्मन कबरों में क्योंकर पहुँचेंगे? और उन बिचारों को जो कि पुण्यात्मा वा पापात्मा हैं। इतने समय तक सभी को कबरों में दौरेसुपुर्द कैद क्यों रक्खा ? और आजकल खुदा की कचहरी बन्ध होगी और खुदा तथा फरिश्ते निकम्मे बैठे होंगे? अथवा क्या काम करते होंगे। अपने-अपने स्थानों में बैठे इधर-उधर घूमते, सोते, नाच तमाशा देखते व ऐश आराम करते होंगे। ऐसा अन्धेर किसी के राज्य में न होगा। ऐसी-ऐसी बातों को सिवाय जङ्गलियों के दूसरा कौन मानेगा ? ।।१४८।।

क्रमशः अगले अंक में.....

१ साइमन कमीशन --
कुछ जातिवादी स्वार्थी लिखते हैं कि साइमन कमीशन भारत के भले के लिए आया था। इसमे पहला वर्ग यह झूठ बोलता है कि साइमन दलित बस्तियों मे जाकर दलितों के हाल चाल देखने आया था तो दूसरा वर्ग कहता है कि साइमन किसानो का हाल चाल पूछने आया था। क्योंकि इनके जातीय नेता साइमन कमीशन के समर्थन मे खड़े थे। अब ये इन जातिवादियों का दुर्भाग्य ही है कि इनका झूठ सार्वजनिक हो गया है। साइमन का न दलितों से कोई लेना देना था और ना ही किसानो से।
साइमन कमीशन की नियुक्ति ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने सर जान साइमन के नेतृत्व में की थी। इस कमीशन में सात सदस्य थे, जो सभी ब्रिटेन की संसद के मनोनीत सदस्य थे। यही कारण था कि इसे 'श्वेत कमीशन' कहा गया। साइमन कमीशन की घोषणा ८ नवम्बर, १९२७ ई. को की गई। कमीशन को इस बात की जाँच करनी थी कि क्या भारत इस लायक हो गया है कि यहाँ लोगों को संवैधानिक अधिकार दिये जाएँ। इस कमीशन में किसी भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया, जिस कारण इसका बहुत ही तीव्र विरोध हुआ।

३ फरवरी १९२८ को कमीशन भारत पहुंचा। साइमन कोलकाता लाहौर लखनऊ, विजयवाड़ा और पुणे सहित जहाँ जहाँ भी पहुंचा उसे जबर्दस्त विरोध का सामना करना पड़ा और लोगों ने उसे काले झंडे दिखाए। पूरे देश में साइमन गो बैक (साइमन वापस जाओ) के नारे गूंजने लगे। ३० अक्टूबर १९२८ को लाला लाजपत राय के नेतृत्व में साइमन का विरोध कर रहे युवाओं को बेरहमी से पीटा गया। पुलिस ने लाला लाजपत राय की छाती पर निर्ममता से लाठियां बरसाईं। वह बुरी तरह घायल हो गए और मरने से पहले उन्होंने बोला था कि ''आज मेरे उपर बरसी हर एक लाठी कि चोट अंग्रेजों की ताबूत की कील बनेगी'' अंततः इस कारण १७ नवंबर १९२८ को उनकी मृत्यु हो गई।

१० दिसम्बर १९२८ की रात को निर्णायक फैसले हुए। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, जय गोपाल, दुर्गा भाभी आदि एकत्रित हुए। भगत सिंह ने कहा कि उसे मेरे हाथों से मरना चाहिए। आजाद, राजगुरु, सुखदेव और जयगोपाल सहित भगत सिंह को यह काम सौंपा गया।

लाला लाजपत राय के जन्म दिन २८ जनवरी पर कुछ श्रद्धा सुमन

-डॉ. विवेक आर्य

१७ दिसम्बर १९२८ को उप-अधीक्षक सांडर्स दफ्तर से बाहर निकला। उसे ही स्कॉट समझकर राजगुरु ने उस पर गोली चलाई, भगत सिंह ने भी उसके सिर पर गोलियां मारीं। अंग्रेज सत्ता कांप उठी। अगले दिन एक इश्तिहार भी बंट गया, लाहौर की दीवारों पर चिपका दिया गया। लिखा था- हिन्दुस्थान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने लाला लाजपत राय की हत्या का प्रतिशोध ले लिया है और फिर ''साहिब'' बने भगत सिंह गोद में बच्चा उठाए वीरांगना दुर्गा भाभी के साथ कोलकाता मेल में जा बैठे। राजगुरु नौकरों के डिब्बे में तथा साधु बने आजाद किसी अन्य डिब्बे में जा बैठे। स्वतंत्रता संग्राम के नायक नया इतिहास बनाने आगे निकल गए। कोलकाता में भगत सिंह अनेक क्रांतिकारियों से मिले। भगवती चरण वहां पहले ही पहुंचे हुए थे। सेंट्रल असेंबली में बम फेंकने का विचार भी कोलकाता में ही बना था। इसके लिए अवसर भी शीघ्र ही मिल गया। केन्द्रीय असेंबली में दो बिल पेश होने वाले थे- ''जन सुरक्षा बिल'' और ''औद्योगिक विवाद बिल'' जिनका उद्देश्य देश में उठते युवक आंदोलन को कुचलना और मजदूरों को हड़ताल के अधिकार से वंचित रखना था।

भगत सिंह और आजाद के नेतृत्व में क्रांतिकारियों की बैठक में यह फैसला किया गया कि ८ अप्रैल १९२९ को जिस समय वायसराय असेंबली में इन दोनों प्रस्तावों को कानून बनाने की घोषणा करें, तभी बम धमाका किया जाए। इसके लिए श्री बटुकेश्वर दत्त और विजय कुमार सिन्हा को चुना गया, किन्तु बाद में भगत सिंह ने यह कार्य दत्त के साथ स्वयं ही करने का निर्णय लिया।

२- **अनाथालय**- अकाल महामारी आदि मे जो बच्चे अनाथ हो जाते उन्हे ईसाई बना लिया जाता। इस समस्या से बचने के लिए लाला जी ने अनेक अनाथालय खुलवाए। इन अनाथालयों के कारण हजारों बेटियाँ वेश्यालयों मे जाने से बची और हजारो बेटे पादरियों की हवस का शिकार बनने से बचे। यह एक क्रांतिकारी कदम था जिसका जिक्र कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के एक जनरल मे हुआ।

३- **समाज सुधार** - उत्तराखण्ड मे एक जाति मे अपनी बेटियों से वेश्यावृति करवाने की गंदी परम्परा थी। लाला लाजपत राय और महात्मा नारायण स्वामी के प्रयासो से यह परम्परा समाप्त हुई। आज यह बात किसी को भी नहीं पता।

४- PNB की स्थापना प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता एवं शेरे-पंजाब लाला लाजपत राय द्वारा १६ अप्रैल १८९५ को लाहौर के प्रसिद्द अनारकली बाजार में हुई थी। इस बैंक की स्थापना करने वालों में लाला हरकिशन लाल (पंजाब के प्रथम उद्योगपति), दयाल सिंह मजीठिया (ट्रिब्यून अखबार के संस्थापक), लाला लालचंद (DAV कॉलेज के संस्थापक कर्ता) राय मूल राज (लाहौर आर्य समाज के प्रधान), पारसी महोदय जेस्सावाला (प्रसिद्द व्यापारी), बाबू काली प्रसन्न रोय (प्रसिद्द वकील एवं कांग्रेस नेता)आदि थे। उस काल में केवल अंग्रेजों द्वारा संचालित बैंक ही देश में थे। अंग्रेज सरकार बहुत कम ब्याज दर पर देशवासियों का रूपया बैंक में रखती थी और बहुत अधिक ब्याज दर पर ऋण देती थी। देश के संसाधनों के ऐसे दुरूपयोग को देखकर राय बहादुर मूलराज ने लाला लाजपत राय को स्वदेशी बैंक की स्थापना करने की सलाह दी थी। स्वामी दयानन्द के समाज सुधार आंदोलन का एक पृष्ठ PNB बैंक की स्थापना को कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसकी स्थापना करने वाले लोग अधिकतर आर्यसमाजी थे अथवा राष्ट्रवादी थे। इसलिए PNB ने अंग्रेज सरकार से किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं लिया। उस समय २ लाख रुपये की धनराशि से बैंक का आरम्भ किया गया था। PNB देश का ऐसा एकमात्र स्वदेशी बैंक है जो आज भी कार्यरत है। तत्कालीन सभी स्वदेशी बैंक या तो बंद हो चुके है अथवा अधिकृत हो चुके है।

उस काल में निर्धन भारतीय साहूकारों से ऋण लिया करते थे। अशिक्षित किसानों से मनचाही बहियों पर अंगूठा लगवाकर साहूकार मनमाना ब्याज वसूलते थे। अकाल, बाढ़ आदि आ जाते तो किसान पूरा जीवन न उस ऋण से कभी मुक्त होता। अंग्रेजों द्वारा स्थापित बैंक केवल प्रभावशाली लोगों को ऋण देते थे। गरीब भारतीयों की वहां तक कोई पहुँच नहीं थी। लाला जी ने जब इस शोषण और अत्याचार को देखा तो इसका व्यावहारिक समाधान निकालने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने राष्ट्रवादी मित्रों के साथ मिलकर PNB की स्थापना की। इसका उद्देश्य गरीबों को साहूकार और अंग्रेज दोनों के अत्याचारों से मुक्त करवाना था। लाला जी का प्रयोग अत्यंत सफल रहा। शीघ्र ही पूरे पंजाब में PNB की शाखाएं फैल गई। इससे गरीबों को कर्ज के जाल से मुक्ति मिली। लाला जी का संकल्प पूरा हुआ। समाज सुधार के इस सफल उदहारण को न किसी इतिहास की पुस्तक में पढ़ाया जाता, न ही किसी अर्थशास्त्र की पुस्तक में पढ़ाया जाता। इसके दो कारण है। पहला तो वोट बैंक की राजनीति। इस सुधारवादी कदम का बखान करने से वोट नहीं मिलते। दूसरा कम्युनिस्ट मानसिकता वाले साम्यवादी लेखक है। वे गरीबों के हक, शोषण की बात तो करते है परन्तु उसका समाधान कभी नहीं करते। वे केवल अपने राजनितिक हितों को साधने में लगे रहते है। आज तक साम्यवादियों ने ऐसा कोई सामाजिक सुधार किया हो तो बताये।

५-मुस्लिम कानून और मुस्लिम इतिहास को पढ़ने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि उनका मजहब उनके अच्छे मार्ग में एक रुकावट है। मुसलमान जनतांत्रिक आधार पर हिन्दुस्तान पर शासन चलाने हेतु हिन्दुओं के साथ एक नहीं हो सकते । क्या कोई मुसलमान कुरान के विपरीत जा सकता है ? हिन्दुओं के विरूद्ध कुरान और हदीस की निषेधाज्ञा की क्या हमें एक होने देगी ? मुझे डर है कि हिन्दुस्तान के ७ करोड़ मुसलमान अफगानिस्तान, मध्य एशिया अरब, मैसोपोटामिया और तुर्की के हथियारबंद गिरोह मिलकर अप्रत्याशित स्थिति पैदा कर देंगें ।

(पत्र सी आर दास बी एस ए वाडमय खण्ड १५ पृष्ठ २७५)

सर सैयद के नाम से खुले पत्र लिखे जो क्रमशः २७ अक्टूबर १८८८, १५ नवम्बर १८८८, २२ नवम्बर १८८८ और २० दिसम्बर १८८८ को एक उर्दू पत्र "कोहे-नूर" में प्रकाशित हुये। इन पत्रों में लाला लाजपत राय ने खुले शब्दों में सैयद के बदले हुये स्वभाव पर सवाल किये। उन्होंने अपने पत्रों के माध्यम से सर सैयद के दोगले स्वभाव से देशवासियों को परिचित कराना आवश्यक समझा इसलिये खुले पत्र लिखे। सर सैयद अहमद खाँ को लिखे गये खुले पत्रों ने इन्हें एक राजनैतिक नेता के रुप में प्रसिद्ध कर दिया। लाला लाजपत राय ने इन खुले पत्रों की एक किताब लिखकर प्रकाशित किया और यह किताब काँग्रेस के अगले अधिवेशन से पूर्व ही प्रकाशित हो गयी।

इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद इन्हें काँग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया गया। लालजपत राय जब अधिवेशन में भाग लेने पहुँचे उस समय प्रयाग स्टेशन पर इनका स्वगात मदन मोहन मालवीय और अयोध्यादास ने किया। इस समय ये सर सैयद की पोल खोलने वाले के रुप में प्रसिद्ध हो गये थे।

●●●

हम किसकी भक्ति करें

–स्वामी सत्यानन्द

यहाँ पर प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम परमात्मा की भक्ति क्यों करें? ईश्वरभक्ति की हमें क्या आवश्यकता है? हम जड़ पदार्थों अथवा अल्प मनुष्यों की भक्ति क्यों न करें? ईश्वर की भक्ति से हमें क्या लाभ हो सकता है? यह प्रश्न वास्तव में बड़ा गम्भीर तथा विचारणीय है।

शास्त्र कहते हैं, कि जो जिसकी भक्ति करता है, वह तद्रूप हो जाता है। जो जिसका चिन्तन करता है वह उसी के रंग में रंगा जाता है, जो जिसका अधिक ध्यान करता है वह उसी का स्वभाव ग्रहण करता जाता है। जैसे लोहे का गोला अधिक काल तक अग्नि में रखे रहने से पहिले गर्म और फिर गर्म से लाल और फिर लाल से तद् रूप अर्थात् अग्नि का रूप ग्रहण करता जाता है, इसी प्रकार जो मनुष्य जिस चीज या वस्तु का अधिक ध्यान करता है वह उसी के रंग में रंगा जाता है।

यदि हम मनुष्यों की भक्ति करते हैं तो इसमें सन्देह नहीं कि हममें उन उपास्य देवताओं के गुण आवेंगे। क्योंकि मनुष्य सारे के सारे ही अल्पज्ञानी होते हैं उनमें कमजोरियाँ होती हैं इसलिए यह स्वाभाविक है कि मनुष्यों की पूजा और भक्ति करने से जहाँ हम उनके गुणों को ग्रहण करते हैं वहाँ अवगुण भी हममें आ जाते हैं। जड़ पदार्थों की पूजा करने से मनुष्य के अन्तरीय सूक्ष्म विचारों का नाश हो जाता है, और वह जड़ की न्याईं जड़ बन जाता है। इसलिए वेद भगवान् कहता है।

अन्धंतमः प्रविशन्ति ये
ऽविद्यामुपासते
(यजु. ४०.९)

कई मनुष्य जो जड़ पदार्थों की पूजा करते हैं उनका हृदय जड़ पदार्थों के समान प्रकाशशून्य हो जाता है, और वे अन्धकार में ठोकरें खाते फिरते हैं। इसलिए पूजा का परिणाम यही है कि मनुष्य जिसकी पूजा करता है वह उसके रंग में रंगा जाता है। यदि जड़ पदार्थों की पूजा करने से मनुष्य को शांति मिल सकती तो इस संसार में जो सबसे ज्यादा जड़ पदार्थों की पूजा करते हैं अर्थात् जो सबसे अधिक धनी हैं, जो सबसे अधिक यश रखते हैं, वह कदापि दुःखी न देखे जाते।

वेद में भक्ति

परन्तु जिस अवस्था में जड़ पदार्थ प्रकाशशून्य हैं, शांति और शक्तिशून्य हैं, इस अवस्था में उनकी पूजा तथा भक्ति करने से मनुष्य को शान्ति क्यों कर मिल सकती है? पूजा के लिए आवश्यकता है एक महाशक्ति की, भक्ति के लिए आवश्यकता है एक महाशक्ति की, भक्ति के लिए आवश्यकता है एक सर्वव्यापक सर्व शक्तिमान् पापनाशक शान्ति के भण्डार परमात्मा की, भक्ति के लिए आवश्यक है एक शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव सच्चिदानन्द की। वेद भगवान् कहता है –

पर्य्यगच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ
शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः
स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच
छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।
(यजु. ४०.८)

परमात्मा शुक्र अर्थात् आनन्द है, वह घावों आदि क्लेशों से रहित है, दुःख का नाशक है, सुख का दाता है, वह निराकार है, वह आवरण अर्थात् रोग रहित है, वह अस्नाविर अर्थात् नस-नाड़ी के बन्धनों से मुक्त है, उसकी कोई मूर्ति नहीं है, वह शुद्ध पवित्र है, और पवित्र कर्ता है, वह पापाविद्ध अर्थात् पाप रहित और मनुष्य को पापों से मुक्ति देने वाला है, वह कवि अर्थात् अन्तर्यामी है, वह मनीषी अर्थात् मनुष्यों के मनों को देखने वाला है, वह परिभूः अर्थात् सर्वव्यापक है वह स्वयंभूः अर्थात् अपनी सत्यता में उपस्थित है, वही इस सृष्टि का हर्ता कर्ता और धर्ता है। वेद भगवान् कहता है कि ऐसे ही परमात्मा की भक्ति और पूजा करके मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं। यह एक साधारण नियम है कि एक महाशक्तिमान् की पूजा मनुष्य को स्वाभाविक शक्तिमान् बनाती है। जिस कदर हम इस सर्वशक्तिमान् की पूजा करते हैं और हृदय से पूजा करते हैं। अथवा प्रेम से भक्ति करते हैं उसी कदर हमारा आत्मा बलवान् होता जाता है और पुष्ट होता जाता है। वेद भगवान् कहता है:

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम।
(यजु. २५.१३)

आत्मा का बल वही परमात्मा है। ऐसा क्यों हैं, इसलिए कि आत्मा एक चेतन वस्तु है, आत्मा जीवन है, एक चेतन वस्तु को जड़ वस्तु से बल नहीं मिला करता। जड पदार्थों की पूजा से आत्मा को कदापि बल प्राप्त नहीं हो सकता, प्रत्युत चेतन परमात्मा से ही बल पा सकता है। क्योंकि यह ईश्वरीय नियम है कि जहां जीवन होता है वहाँ से ही दूसरों को जीवन मिला करता है, जहाँ शक्ति होती है वहाँ से ही दूसरों को शक्ति मिला करती है। जड़ पदार्थों में जब जीवन ही नहीं है तो उनकी पूजा करके एक चेतन आत्मा कैसे जीवन पा सकता है? इसको क्या बल या ढाढस मिल सकता है? कुछ भी नहीं। इसलिए वेद भगवान् कहता है कि भक्ति के योग्य केवल एक परमात्मा ही है। अज्ञानी अज्ञानता के वश होकर जड़ पदार्थों की पूजा करते हैं परन्तु वे जो ज्ञानी हैं, वे जो देवता हैं, वे जिनका हृदय ज्ञान से दीप्यमान हैं वे कदापि जड़ वस्तुओं की पूजा नहीं कर सकते, किन्तु वे रात-दिन उसी परमपूज्य परमात्मा की भक्ति में मग्न रहते हैं। वेद भगवान् कहता है कि उसकी भक्ति में मग्न रहना मनुष्य को मृत्यु से बचा सकता है।

मृत्यु क्या है? साधारण शब्दों में हम आत्मा से शरीर की पृथक्ता का नाम 'मृत्यु' रखते हैं। यदि यह सत्य है कि आत्मा की पृथक्ता से शरीर की मृत्यु हो जाती है तो जब परमात्मा आत्मा के भी आत्मा है और वह आत्मा में इस तरह निवास करते हैं जिस तरह शरीर में आत्मा निवास करता है तो वह आत्मा चेतन होता हुआ भी मुर्दा नहीं होगा, जिसमें ईश्वर प्रेम नहीं है। ईश्वर ही तो आत्मा का जीवन है।

उपनिषद् कहता है–

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो
यद्वाचो ह वाचः स उ प्राणस्य
प्राणः
(केनोप० १.२)

परमात्मा ही आत्मा के श्रोत्र का श्रोत्र है, परमात्मा ही आत्मा के मन का मन है, परमात्मा ही आत्मा की वाक्यशक्ति है और परमात्मा ही आत्मा का प्राणाधार है। इसलिए वेद भगवान कहता है:-

यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः।

अर्थात् परमात्मा को अपने आत्मा में अनुभव करना और उसी को हर्ता-कर्ता अनुभव करते हुए रात-दिन उसी की शरण में और उसी की भक्ति में अपने आपको लीन रखना ही आत्मा का जीवन है, और उससे दूर हो जाना अर्थात् उसकी भक्ति से शून्य हो जाना, उसके प्रेम से खाली हो जाना मानो आत्मा से आत्मा का खाली हो जाना है। इस आत्मिक मृत्यु से मनुष्य उसी अवस्था में बच सकता है जबकि वह अमर परमात्मा को प्राप्त हो। मनुष्य जोकि स्वयं मृत्यु के मुँह में फंसा हुआ है उसकी पूजा करने से आत्मा इस आत्मिक मृत्यु से नहीं बच सकता। जड़ पदार्थ जो कि स्वयं शून्य हैं, उनकी पूजा करने से भी आत्मा आत्मिक मृत्यु से नहीं बच सकता। आत्मा का जीवन परमात्मा है। उसकी भक्ति करने से, उसी की शरण लेने से, उसी के प्रेम में मग्न होने से, उसकी शरण लेने से आत्मा जीवन पा सकता है, मुक्त हो सकता है। उपनिषद् कहती है:-

एतदालम्बनःश्रेष्ठमेतदालम्बनं
परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके
महीयते।
(कठो. २.१७)

परमात्मा ही एक आत्मा का आधार है और परमात्मा ही आत्मा के लिए सबसे श्रेष्ठ और परम पवित्र आधार है, परमात्मा ही आत्मा के लिए शरण है, वही इसके लिए मृत्यु के विरुद्ध एक सुरक्षित ढाल है जो इस आधार को अपना आधार बनाता है। जो इस आधार को अपने आत्मा का आधार बनाता है, जो इस Asylum को अपने आत्मा के लिए मौत के विरुद्ध Asylum बनाता है, वही है जो मृत्यु से ऊपर हो जाता है, अर्थात् ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है या दूसरे शब्दों में मुक्ति को प्राप्त होता है। मैंने कहा था कि लोग प्रश्न करते हैं कि ईश्वरभक्ति की क्या आवश्यकता है? क्यों आवश्यकता है यह अब पता लग गया कि यदि हम जड़ पदार्थों की भक्ति करते हैं तो हम जड़ की न्याईं विचारशून्य, जीवनशून्य, उत्साहशून्य हो जाते हैं। यदि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हममें जीवन आता है, उत्साह आता है, तेज आता है, बल और पराक्रम आता है क्योंकि यह एक साधारण बात है कि जितना हम अल्प वस्तुओं की भक्ति करेंगे उतना ही हमारा विचार, हमारा जीवन, हमारा तेज, हमारा बल भी अल्प होगा परन्तु जहाँ तक एक महान् और प्रभावशाली जीवन के आधार, आत्मा के आधार, सर्वशक्तिमान् तेजोमय परमात्मा की पूजा करेंगे उतने ही हम महान् होते जावेंगे। अपने ज्ञान के भण्डार वेद में ईश्वर में हमें शिक्षा देते हैं कि हे मनुष्यो! पदार्थों की पूजा छोड़ कर नित्य प्रति तुम यह प्रार्थना किया करो–

तेजो असि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि देहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
सहोऽसि सहो मयि धेहि।।
(यजु. १२.९)

अर्थात्-हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूं, क्योंकि तू तेज है, तेरी भक्ति द्वारा तेरे तेज को प्राप्त कर सकें। हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ कि तू शक्ति है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस शक्ति को प्राप्त कर सकें। हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ क्योंकि तू बलपुंज है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस बल को प्राप्त कर सकें। हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ क्योंकि तू जीवनाधार है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस आधार को प्राप्त कर सकें। हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ क्योंकि तू सहनशील है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा सहनशील बन सकें। हे परमात्मन्! मैं तेरी भक्ति इसलिए करता हूँ क्योंकि तू सबको यथावत् फल देने वाला है, मैं तेरी भक्ति के द्वारा इस न्यायशीलता को ग्रहण कर सकें, इत्यादि।

●●●

शोक समाचार

● आर्य समाज रायबरेली के वरिष्ठ संरक्षक वैदिक विद्वान एवं शिक्षाविद्, पूर्व प्रधानाचार्य श्री धर्मेन्द्र कुमार वर्मा का ८७ वर्ष की आयु में दिनांक ३० जनवरी, २०२५ को अचानक देहान्त हो गया।

स्व. धर्मेन्द्र कुमार वर्मा आर्य समाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सदैव अग्रणी रहे। महर्षि की विचारधारा को आगे बढ़ाने में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। उनकी इच्छानुरूप स्व. धर्मेन्द्र कुमार वर्मा का शव एम्स, रायबरेली को सौंप दिया गया। जो देह दान का संकल्प कुछ अर्सा पूर्व उन्होंने लिया था।

● आर्य समाज बढ़ापुर जनपद बिजनौर के वरिष्ठ सदस्य श्री ठाकुर कृष्णा सिंह का दिनांक २७ जनवरी, २०२५ की शाम को अचानक देहान्त हो गया।

स्व. ठाकुर कृष्णा सिंह जी आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित ऋषि भक्त थे, विद्वतता में श्रेष्ठ थे। उनकी मृत्यु से आर्य जगत में आई रिक्तता की भरपाई होना असम्भव है। ईश्वरी विधान अपरिवर्तनीय है उसके आगे हम सभी नतमस्तक हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा एवं सभी अधिकारीगण अपनी शोक संवेदनायें व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्माओं की सद्गति एवं परिजनों को यह असहनीय पीड़ा सहन करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

स्वामी दर्शनानन्द जी के प्रेरणादायक संस्मरण

(२६ जनवरी जन्म दिवस के अवसर पर प्रकाशित)

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श सन्यासी के रूप में गुजरा। उनका परमेश्वर में अटूट विश्वास एवं दर्शन शास्त्रों के स्वाध्याय से उन्नत हुई तर्क शक्ति बड़ो बड़ो को उनका प्रशंसक बना लेती थी। संस्मरण उन दिनों का हैं जब स्वामी जी के मस्तिष्क में ज्वालापुर में गुरुकुल खोलने का प्रण हलचल मचा रहा था। एक दिन स्वामी जी हरिद्वार की गंगनहर के किनारे खेत में बैठे हुए गाजर खा रहे थे। किसान अपने खेत से गाजर उखाड़कर , पानी से धोकर बड़े प्रेम से खिला रहा था। उसी समय एक आदमी वहां पर से घोड़े पर निकला। उसने स्वामी जी को गाजर खाते देखा तो यह अनुमान लगा लिया की यह बाबा भूखा हैं। उसने स्वामी जी से कहा बाबा गाजर खा रहे हो भूखे हो। आओ हमारे यहां आपको भरपेट भोजन मिलेगा। अब यह गाजर खाना बंद करो। स्वामी जी ने उसकी बातों को ध्यान से सुनकर पहचान कर कहा। तुम ही सीताराम हो, मैंने सब कुछ सुना हुआ हैं। तुम्हारे जैसे पतित आदमी के घर का भोजन खाने से तो जहर खाकर मर जाना भी अच्छा हैं। जाओ मेरे सामने से चले जाओ। सीताराम दरोगा ने आज तक अपने जीवन में किसी से डांट नहीं सुनी थी। उसने तो अनेकों को दरोगा होने के कारण मारापीटा था। आज उसे मालूम चला की डांट फटकार का क्या असर होता हैं। अपने दर्द को मन में लिए दरोगा घर पहुंचा। धर्मपत्नी ने पूछा की उदास होने का क्या कारण हैं। दरोगा ने सब आपबीती कह सुनाई। पत्नी ने कहा स्वामी वह कोई साधारण सन्यासी नहीं अपितु भगवान हैं। चलो उन्हें अपने घर ले आये। दोनों जंगल में जाकर स्वामी जी से अनुनय-विनय कर उन्हें एक शर्त पर ले आये। स्वामी जी को भोजन कराकर दोनों ने पूछा स्वामी जी अपना आदेश और सेवा बताने की कृपा करे।

सीताराम की कोई संतान न थी और धन सम्पति के भंडार थे। स्वामी जी ने समय देखकर कहा की सन्यासी को भोजन खिलाकर दक्षिणा दी जाती हैं। सीताराम ने कहा स्वामी जी आप जो भी आदेश देंगे हम पूरा करेंगे। स्वामी जी ने कहा धन की तीन ही गति हैं। दान, भोग और नाश। इन तीनों गतियों में सबसे उत्तम दान ही हैं। मैं निर्धन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के संस्कार देकर, सत्य विद्या पढ़ाकर विद्वान बनाना चाहता हूँ। इस पवित्र कार्य के लिए तुम्हारी समस्त भूमि जिसमें यह बंगला बना हुआ हैं। उसको दक्षिणा में लेना चाहता हूँ। इस भूमि पर गुरुकुल स्थापित करके देश, विदेश के छात्रों को पढ़ाकर इस अविद्या, अन्धकार को मिटाना चाहता हूँ। स्वामी जी का संकल्प सुनकर सीताराम की धर्मपत्नी ने कहा। हे पतिदेव हमारे कोई संतान नहीं हैं और हम इस भूमि का करेंगे क्या। स्वामी जी को गुरुकुल के लिए भूमि चाहिए उन्हें भूमि दे दीजिये। इससे बढ़िया इस भूमि का उपयोग नहीं हो सकता। सिताराम ने अपनी समस्त भूमि, अपनी सम्पति गुरुकुल को दान दे दी और समस्त जीवन गुरुकुल की सेवा में लगाया। एक जितेन्द्रिय, त्यागी, तपस्वी सन्यासी ने कितनो के जीवन का इस प्रकार उद्धार किया होगा। इसका उत्तर इतिहास के गर्भ में हैं मगर यह प्रेरणादायक संस्मरण चिरकाल तक सत्य का प्रकाश करता रहेगा।

एक बार स्वामी दर्शनानन्द जी का दिल्ली में उपदेश हो रहा था। यह घटना सदर बाजार और पहाड़ी धीरज के बीच की है जहाँ आजकल बारह टूटी चौक है। पास में हाफिज बन्ना की सराय थी जहाँ दूर-दूर के यात्री अपनी बैलगा- ड़ियाँ खड़ी करते थे। सायं का समय था। लोग स्वामी जी का उपदेश ध्यान से सुन रहे थे। उपदेश का विषय था- कर्म और फल। स्वामी जी ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। कर्म के फल को टाला नहीं जा सकता और न ही किसी और के कर्म के फल को कोई दूसरा भोग सकता। उपदेश सुनने वालों में रोहतक देहात से आए हुए तीन व्यक्ति भी उपस्थित थे। भाषण के बाद वे तीनों व्यक्ति स्वामी जी के पास पहुंचे और कहा कि बाबाजी हम आपसे एकान्त में कुछ बात करना चाहते हैं। वे तीनों स्वामी जी को पास के जंगल में ले गए। स्वामी जी को उन के बारे में कुछ शंका होने लगी पर तभी वे तीनों जमीन पर बैठ गए और स्वामी जी के बैठने के लिए चादर बिछा दी। उन्होंने स्वामी जी से आज के उपदेश के बारे में अपने कुछ प्रश्न कहे और उनके उत्तर प्राप्त करके बहुत संतुष्ट हुए। इसके बाद एक ने गंभीर होकर पूरी बात बताई- 'स्वामी जी हम तीनों डाकू हैं। हम देहली में डाका डालने आए थे। परन्तु आपके उपदेश से हमारा हृदय परिवर्तन हो गया है। आज से हम यह काम छोड़ रहे हैं।' उन्होंने स्वामी जी का बहुत आदर सत्कार किया और उन्हें उनके ठहरने के स्थान पर छोड़ गए। ये तीनों व्यक्ति उस दिन से पूरी तरह बदल गए। ये आर्यसमाज में शामिल हो गये और इन्होंने समाज सेवा के बड़े-बड़े कार्य किये। इनमें से एक थे चौधरी पीरू सिंह, जिन्होंने अपने गांव मटिण्डु में अपनी तीस बीघे भूमि दान देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल की स्थापना कराई। दूसरे व्यक्ति थे फरमाणा गांव के लाला इच्छाराम, जिनके सुपुत्र हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार और प्रो० रामसिंह जी आर्य समाज के नेता और विद्वान् बने। तीसरे थे- फरमाणा गांव के ही चौ० जुगलाल जैलदार, जो अपनी वीरता, निर्भीकता व समाज-सुधार के कार्यों के कारण बहुत प्रसिद्ध हुए। यह वह समय था जब उपदेश देने वाले भी सच्चे होते थे और उपदेश ग्रहण करने वाले भी। आज उपदेश करने वाले हजारों हैं और सुनने वाले लाखों! पर उनमें से शायद ही किसी का जीवन इस तरह बदलता हो, जिस तरह इन तीनों का बदल गया।

स्वामी जी ने अपने जीवन में न जाने कितनी आत्माओं पर उपकार किया। स्वामी जी की जीवनी हर आर्य को एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। - सोशल मीडिया

ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा क्या है ?

ईसाई- पाप क्षमा करना -डॉ० विवेक आर्य

मुस्लमान- जन्नत और हूरें प्रदान करना

पौराणिक हिन्दू- अवतार लेकर दुःख दूर करना

वैदिक धर्मी- पुरुषार्थ के लिए बुद्धि प्रदान करना

ईश्वर हमारे ऊपर अनेक उपकार करते हैं। विभिन्न विभिन्न मत मतान्तर अपनी अपनी मान्यता के अनुसार ईश्वर की कृपा का होना मानते हैं। वैसे तो सत्कर्म करने के लिए मनुष्य रूपी शरीर प्रदान करना ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा हैं। इस लेख के माध्यम से हम ईश्वर की कृपा का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

एक ईसाई के लिए ईश्वर द्वारा पाप क्षमा होना ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा हैं। ईसाई मान्यता के अनुसार जन्म से सभी पापी हैं क्यूंकि हव्वा (eve) द्वारा ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया गया था एवं उसके लिए वह पापी ठहराई गई थी। जन्म से सभी का पापी होना कल्पना मात्र हैं। मान लीजिये किसी के पिता ने चोरी का अपराध किया हो तो क्या उसकी सजा उसके पुत्र को यह कह कर देंगे की उसके पिता ने चोरी रूपी पाप किया था इसलिए वह भी पापी हैं? कदापि नहीं इसलिए ईसाई मत में पहले निरपराधी को पापी बनाना एवं बाद में पाप क्षमा होने के लिए ईसा मसीह का सूली पर चढ़ना कल्पना प्रतीत होता हैं। जिस प्रकार से भोजन कोई अन्य करे और पेट किसी अन्य का भरे यह संभव नहीं हैं उसी प्रकार से ईसा मसीह द्वारा सूली पर चढ़ने से मनुष्यों के पापों का क्षमा होना भी संभव नहीं हैं। जो जैसा करेगा वो वैसा भरेगा कर्म फल का अटल सिद्धांत व्यवहारिक एवं तर्कसंगत हैं। इसलिए पाप क्षमा होने को ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा के रूप में मानना संभव नहीं हैं।

एक मुसलमान के लिए जन्नत की प्राप्ति एवं हूरों का भोग ईश्वर या अल्लाह की सबसे बड़ी कल्पना हैं। इस्लामिक मान्यता के अनुसार सुन्दर सुन्दर बीवियाँ, खूबसूरत लौंडे, शराब की नदियाँ, मीठे पानी के चश्में आदि को मनुष्य जीवन का लक्ष्य मानना ऐसा प्रतीत होता हैं जैसे अरब की तपती रेत, खारे पानी और निष्ठुर रेतीली धरती से तंग आकर कोई स्वप्न में भोग की कल्पना करता हो। निश्चित रूप से संसार का कोई भी बुद्धिजीवी व्यक्ति जन्नत रूपी भोगलोक को मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य स्वीकार नहीं कर सकता। अगर ऐसा होता तो विश्व में वर्तमान में अनेक सऊदी शेख से लेकर पूर्वकाल में इस्लमिक आक्रान्ताओं से लेकर अनेक नवाब ऐसे हुए हैं जिनके पास उनके निजी हरम में भोग के लिए हजारों लड़कियाँ थी और सभी प्रकार का भोग का सब साजो समान भी विद्यमान था । क्या इसका यह तात्पर्य निकाले की उन्होंने मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य और ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा को प्राप्त कर लिया था? ऐसा संभव नहीं हैं क्यूंकि हरम के मालिक होते हुए भी उनकी मृत्यु अनेक कष्टों को भोगते हुए हुई थी। आज संसार में बढ़ रही मजहबी कट्टरता एवं आतंकवाद इसी जन्नत के ख्वाब को पूरा करने की कवायद हैं जिसके कारण सम्पूर्ण विश्व की शांति भंग हो गई हैं। जो कार्य विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा का उद्देश्य कदापि नहीं हो सकता। इसलिए जन्नत और हूरों को ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा के रूप में मानना संभव नहीं हैं।

एक पौराणिक हिन्दू के लिए ईश्वर का अवतार होना एवं उन अवतार द्वारा उसके जीवन के समस्त दुखों का दूर हो जाना , उसके समस्त कष्टों का दूर हो जाना एवं इस पृथ्वी लोक से मुक्ति प्राप्त कर उस अवतार के सम्बंधित लोक जैसे विष्णु जी के क्षीरसागर, शिव जी के कैलाश लोक, कृष्ण जी के गोलोक आदि में सदा सदा के लिए उनकी कृपा में प्रतिष्ठित हो जाना ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा हैं। इस कृपा के लिए कर्म से अधिक विश्वास की महता हैं। तीर्थ यात्रा करना, दान आदि देना, कथा आदि सुनना, विभिन्न कर्मकांड करने मात्र से ईश्वर की कृपा होना पौराणिक हिन्दू समाज में मान्य हैं। कुल मिलाकर यह सोच अकर्मयता, आलस्य, सीमित सोच आदि का बोधक है क्यूंकि इस सोच से प्रभावित व्यक्ति देश, जाति और धर्म की सेवा से अर्थात लोकसेवा से अधिक परलोक की चिंता करता हैं।

भारतीय समाज का पिछले १२०० वर्ष का इतिहास इसी अकर्मयता का साक्षात उदहारण हैं जब उस पर विदेशीयों ने आक्रमण किया तब वह संगठित होकर उनका सामना करने के स्थान पर परलोक की चिंता में लीन रहा। पौराणिक विचारधारा में प्रारब्ध अर्थात भाग्य को पुरुषार्थ से बड़ा माना गया और यही भारतियों की दुर्गति का कारण बना और बनता रहेगा। इसलिए ईश्वर का अवतार लेना एवं दुःखों का दूर होना ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा के रूप में मानना संभव नहीं हैं।

एक वैदिक धर्मी के लिए बुद्धि को ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा माना गया है।

इसीलिए गायत्री मंत्र में ईश्वर से बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने की प्रार्थना की गई हैं। बुद्धि के बल पर मनुष्य पुरुषार्थ रूपी श्रेष्ठ कर्मों को करते हुए, धर्म के देश लक्षण अर्थात धैर्य, क्षमा, मन को प्राकृतिक प्रलोभनों में फंसने से रोकना, चोरी त्याग, शौच, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, विद्या सत्य और अक्रोध आदि का पालन करते हुए अभ्युदय (लोकोन्नति) और निश्रेयस (मोक्ष) की सिद्धि होती हैं। वैदिक विचारधारा में न केवल देश, धर्म और जाति के कल्याण के लिए पुरुषार्थ करने का सन्देश दिया गया हैं अपितु ईश्वर की भक्ति, वेदादि शास्त्रों के ज्ञान एवं पुण्य कर्मों को करते हुए सामाजिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करने का सन्देश भी दिया गया हैं। वैदिक विचारधारा में पुरुषार्थ को प्रारब्ध अर्थात भाग्य से बड़ा माना गया हैं। इसीलिए पुरुषार्थ कर्म को करने के लिए ईश्वर को बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना वेद में अनेक मन्त्रों में की गई हैं। इसीलिए ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा मनुष्य को बुद्धि प्रदान करना तर्क एवं युक्ति संभव हैं।

नारी सम्मान

-डॉ सुशील वर्मा

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः।।

जहां नारियों की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं। वहीं सुख शान्ति का वास होता है, इसके विपरीत जहाँ नरियों का सम्मान नहीं होता वहां सभी क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं। वहां यह भी द्रष्टव्य है कि वेद में विवाह संस्कार में दिए गए उद्देश्यों में स्त्री को मंगलमयी, गृहजनों का कष्टों से उद्धार करने वाली पति के लिए अतिशय सुखदायिनी तथा सास ससुर को शांति देने वाली कहा गया है, वहीं उसे घर की सम्राज्ञी कह कर पुकारा गया है।

सम्राज्ञी श्वशुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रूवां भव
ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधि देवृषु।।
ऋग्.१०/८५/४६

आज नारी को अभद्र रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। वह भारतीय नारी का रूप नहीं। वह तो सरस्वती है जो विदुषी, पत्नी, माता, अध्यापिका आदि रूप में राष्ट्र का कल्याण करती है। वह त्याग, तपस्या एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति है।

अन्ततः यह कहना आवश्यक है कि नारी अपने आदर्शों को धारण करे, भारतीय संस्कृति के अनुसार वेदों का अनुशरण करते हुए इस देश की प्रतिष्ठा, मान सम्मान को उच्च शिखर पर स्थापित करे और हमारे समाज को भी चाहिए कि वह नारी को उसके वंदनीय प्रशंसनीय, अनुकरणीय रूप में प्रतिष्ठित करें।

मोबाइल-७००९८२२७२०

जिस प्रकार सृष्टि की रचना ब्रह्मा करता है उसी तरह स्त्री सन्तान निर्माण करने वाली होती है-''स्त्री ब्रह्मा बभूविथ''। वेद में माता को उषा के समान प्रबोध दायिनी तेजस्वनी दिव्यगुण मयी आदि विशेषणों से सम्मानित किया गया है। वह ही सुयोग्य सन्तति की जननी होती है। मदालसा जो कि सदाचारी धर्मात्मा एवं सत्यनिष्ठा राजा ऋतुध्वज की धर्मपत्नी थी उसने तीन बच्चों को ''शुद्धिऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि'' का पाठ पढ़ाकर ऋषि बनाया और राजा के आग्रह पर चौथे पुत्र को श्रेष्ठ राजकुमार। महाभारत में वीर अभिमन्यु को माता सुभद्रा ने अर्जुन के मुख से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान तो दे दिया परन्तु आगे बाहर निकलने की प्रक्रिया न सुनने के कारण उसी व्यूह से बाहर निकलने की कला न सिखा पायी। यह है उस माता का प्रभाव! माता जीजाबाई ने गर्भ में ही शिवा जी को शिक्षण दिया और उनके उद्देश्य अनुसार ही शिवा जी में वे सभी गुण स्फुटित हुए। सन्त ज्ञानेश्वर की माता ने अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं भक्ति से ओतप्रोत बालक का निर्माण किया। नैपोलियन की माता जब गर्भवती थी तो नित्य फौजियों की कवायद देखा करती थी और उनके जोशीले गीतों के प्रभाव के कारण ही नैपोलियन अपने समय का माता की आकांक्षानुसार बड़ा हुआ। इस प्रकार नारी का बच्चों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

वैदिक साहित्य में माता को प्रतिष्ठा के उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है। मातृमान् पितृमान, आचार्यवान् पुरूषोवेद (शतपथ) के कथनापुसार माता को प्रथम गुरू स्वीकार किया गया है। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द लिखते हैं :- ''वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान! जिसके माता पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता में सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं।'' यही कारण है कि तैत्तिरीय उपनिषद में मातृदेवो भव कह कर देवता की भांति माँ को पूजने का आदेश है। इसलिए श्रेष्ठ सन्तान के निर्माण हेतु माता का सुसंस्कारित होना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द जी का कथन है ''यदि आप एक बालक को शिक्षित करते हैं तो एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, परन्तु जब एक बालिका को शिक्षित करते हैं तो एक पूरा परिवार शिक्षित करते हैं।

आज हम स्त्री को सम्मान देने की चेष्टा कर रहे हैं ये सभी महर्षि दयानन्द की देन है। क्योंकि स्वामी जी ने प्रचार प्रारम्भ किया उस समय देश पतन की चरम सीमा पर था। उस समय नारी एक निर्जीव वस्तु की तरह होकर रह गई थी। उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं था। बाल विवाह, सतीप्रथा, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा ने नारी को पूर्ण रूपेण तिरस्कृत कर दिया था। ''स्त्री शुद्रौ नाधीयताम्'' ''नारी नरकस्य द्वारं'' आदि श्रुतियाँ कहकर उन्हें अपमानित किया जा रहा था। यह स्वामी जी का ही उपकार है कि जिन्होंने वेदमंत्र ''यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्य'' यजुर्वेद का प्रमाण देकर शंकराचार्य के पंडितों के समक्ष एक चुनौती खड़ी कर दी और परिणाम यह हुआ कि उन्हें इसे स्वीकार करना पड़ा। तृतीय सम्मुल्लास में व्यंगात्मक शैली में उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें। जो ये पढ़ेंगे तो हम फिर क्या करेंगे? उत्तर में यह भी लिखा कि नारियों को वेद पढ़ने का अधिकार है। तुम्हीं सोचो क्या परमेश्वर इनका भला नहीं चाहता? क्या परमेश्वर पक्षपाती है? यदि परमेश्वर को इन्हें वेद न पढ़ाना होता तो पुरुषों के समान इनके श्रोत्र वाणी इन्द्रियाँ क्यों बनाता?

महर्षि दयानन्द ने नारी की बेबसी को न केवल सुना अपितु अनुभव भी किया। राजा राम मोहन राय ने अपने भाई हरिमोहन की चिता पर जब अपनी जीवित भाभी को जलते देखा, उसकी चित्कार सुनी तो उन्होंने सती प्रथा के विरूद्ध आवाज उठाई। परन्तु ऋषि दयानन्द का सती प्रथा के विरोध का कोई ऐसा कारण नहीं था, परन्तु फिर भी नारी का दर्द न केवल महसूस किया अपितु एक जोरदार आवाज में इस प्रथा का खण्डन किया और परिणाम स्वरूप विधवा विवाह का समर्थन सशक्त रूप में किया। इसी प्रकार बाल विवाह को रोकने के लिए उन्होंने १६ वर्ष की आयु से कम विवाह न करने की बात कही। यहाँ भी उन्होंने वेद का प्रमाण प्रस्तुत कर समाज को आगाह किया ''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'' जिस प्रकार युवक पूर्ण विद्या एवं शिक्षा प्राप्त करके अनुकूल विदुषी युवती के साथ विवाह करते हैं वैसे ही ब्रह्मचर्यपूर्ण वेदादि शिक्षा ग्रहण करके युवती अपने सदृश विद्वान पूर्ण युवा अवस्था वाले पुरुषों के साथ विवाह करे।

शिक्षा बालक व बालिकाओं के लिए आवश्यक है उन्होंने इसे राजकीय नियम बनाने की बात कहीं। उन्होंने तो ८ वर्ष के पश्चात् जो माता-पिता अपनी सन्तानों को घर पर रखें तो उसके लिए दण्ड विधान का भी प्रावधान आवश्यक बताया। जो बात उस ऋषि ने १८वीं शताब्दी में कही उसी को आज सरकार विभिन्न कानूनों द्वारा सभी समस्याओं का समाधान करने में लगी है। देश की दुरवस्था में सबसे बड़ा कारण नारी शिक्षा के अभाव को मानते हैं। उनका उल्लेख है भला जो पुरूष विद्वान और स्त्री अविदुषी तथा स्त्री विदुषी और पुरूष अविदुस हो तो नित्य प्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे, फिर सुख कहां? उनका मानना था फिर जब नारियाँ सशक्त होंगी तो उनपर अत्याचार नही होंगे। नारी से परिवार बनेगा, परिवार से समाज और समाज से ही राष्ट्र का निर्माण होगा। उन्होंने नारी के मानसिक बौद्धिक व शारीरिक विकास के लिए अपने ग्रन्थों एवं प्रवचनों में जो क्रान्ति पैदा की उसी का परिणाम है कि आज महिलाएं विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं वे ही डाक्टर है, वैज्ञानिक हैं, अन्तरिक्ष यात्री है उच्च पदों पर आसीन हैं। इसी तरह जब नारी पूर्णतया अपने अस्तित्व को पहचान लेगी, वैदिक संस्कृति को आत्मसात् कर लेगी तभी उसका वास्तविक सम्मान होगा। तभी मनु का कथन चरितार्थ होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा में मनाया गया गणतंत्र दिवस पर्व

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रांगण में ७६वाँ गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय पर्व दिनांक २६ जनवरी, २०२५ को प्रातः सर्वश्री विमल किशोर आर्य, भुवन चन्द्र पाठक, शिवशंकर वैश्य, आशुतोष सिंह चौहान, शिवेन्द्र मिश्रा, गोविन्दराम, रिसाल सिंह, अमित आदि की उपस्थिति में मनाया गया।

पृष्ठ १ का शेष....

के लोग परकीय जातियों के रहन-सहन आचार-विचार, वेशभूषा आदि का अंधानुकरण करने लगे तो 'स्व' का ह्रास होना स्वाभाविक ही था! स्वामी दयानन्द की प्रयाग में एक ऐसे ही व्यक्ति से भेंट हुई जो फारसी और अंग्रेजी का अध्ययन करने के पश्चात अपने परंपरागत धर्म तथा आचार- विचारों को तिलांजलि दे बैठा था ! वह अपने आप को पक्का नास्तिक मानता तथा गर्व पूर्व घोषणा करता था कि ईश्वरीय सत्ता के खण्डन में उसके पास १०१ युक्तियों का अद्भुत संग्रह है! उसकी धारणा थी कि ये युक्तियां अकाट्य हैं! विचारों की ही भांति आचार की दृष्टि से भी वह पतन की पराकाष्ठा तक पहुंच चुका था! मद्य-मांस सेवन में तत्पर, वेश्यागमन के दुर्व्यसन में फंसा यह माधवचंद्र चक्रवर्ती नामक धनाढ्य बंगाली स्वामी जी के निकट आया और गर्वस्फीति स्वर में ईश्वर की खण्डनात्मक १०१ युक्तियों को उनके समक्ष रखा!

स्वामी दयानन्द जैसे कुशल तार्किक तथा महान मेधावी पुरुष के लिए इन युक्तियों का समाधान कोई कठिन कार्य नहीं था ! जब चक्रवर्ती महाशय को यह विश्वास हो गया कि इस अपराजेय साधु के आगे उनकी युक्तियां एवं तर्क वाक्छल मात्र हैं तो वे स्वामी जी के समक्ष श्रद्धानवत् हुए तथा उनकी शिक्षाओं तथा उपदेशों को स्वीकार करने में विलंब नहीं किया ! अब चक्रवर्ती महाशय के जीवन में एक नया विहान आया!

इस प्रकार प्रयाग के कुम्भ मेले में धर्मचक्र का प्रवर्तन कर स्वामी दयानन्द फाल्गुन १९२६ विक्रमी में मिर्जापुर आये तथा पूर्व परिचित सेठ रामरतन लड्ढा के बाग में ठहरे !

(स्रोत- नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती)

महर्षि दयानंद सरस्वती का वेद-विषयक दृष्टिकोण

- भावेश मेरजा

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती (१८२५-१८८३) ने वर्तमान युग में वेदों के संबंध में कई मूलभूत वातों की ओर संसार का ध्यान आकर्षित किया है। जैसे कि -

१. ऋक्, यजुः, साम और अथर्व- ये चार मंत्र संहिताएं ही 'वेद' हैं। इन चार मंत्र संहिताएं ही ईश्वर-प्रणीत अथवा अपौरुषेय ज्ञान-पुस्तकें हैं। इन चार के अतिरिक्त जो भी पुस्तकें हैं - मान्य या अमान्य, वे सब मनुष्यों द्वारा रचित अर्थात् पौरुषेय हैं।

२. वेदों में ज्ञान, विज्ञान, कर्म और उपासना - ये चार विषयों का अथवा ईश्वर, जीव और प्रकृति (तथा प्रकृति से उत्पन्न सृष्टि) के संबंध में निर्भ्रान्त ज्ञान वर्णित है। वेद-ज्ञान की सहायता से मनुष्य अपने जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

३. वेदों में किसी राजा, प्रजा, देश, व्यक्ति आदि का बिलकुल इतिहास नहीं है। वेदों तो सृष्टि के आरंभ में प्रकाशित हुए हैं। उनमें किसी मनुष्य का इतिहास नहीं है। मनुष्यों ने वेदाविर्भाव के पश्चात् अपनी आवश्यकता अनुसार व्यक्तिओं, देशों, पर्वतों, नदियों तथा समुद्रों आदि के नाम वेदों के शब्दों के आधार पर निश्चित किए हैं। वेदों के शब्दों के आधार पर नाम रखने की यह परंपरा आज पर्यंत चली आ रही है। परंतु इससे वेदों में इन नामों वाले व्यक्तियों का इतिहास वर्णित है, ऐसा मान लेना तो बिलकुल ही अयोग्य समझा जाएगा। वेदों में मानवीय अनित्य इतिहास का नितान्त अभाव है। हां, सृष्टि की रचना कैसे होती है, प्रथम क्या बनता है, बाद में क्या बनता है, इसका चक्र कैसे चलता है, किन नियमों से सृष्टि चलती है, इत्यादि प्रश्नों के वैज्ञानिक समाधान के रूप में सृष्टि का नित्य इतिहास तो वेदों में है, परंतु उनमें किसी प्रकार का अनित्य मानवीय इतिहास बिल्कुल नहीं है। समस्त वैदिक साहित्य इस बात को प्रमाणित करता है कि वेदों में किसी भी देश, समाज या व्यक्ति का इतिहास नहीं है। इसलिए वे लोग जो वेदों में मानवीय इतिहास की कड़ियाँ या संकेत ढूंढने में विश्वास रखते हैं और इसी हेतु से कार्यरत हैं, वे वास्तव में वेदों के यथार्थ स्वरूप को समझने में भारी भूल कर रहे हैं।

४. वेदों में तीन पदार्थों को अनादि, अनुत्पन्न, नित्य स्वीकार किए गए हैं - ईश्वर, जीव और प्रकृति। इन तीनों पदार्थ की सत्ता सदैव बनी ही रहती है। इसलिए उनका कभी भी अभाव नहीं होता है। ये तीनों सत्ताएं अनादि हैं, वे कभी भी उत्पन्न नहीं होतीं हैं। ये तीनों तो बस ऐसे ही सदा से हैं और आगे भी सदैव बनी रहेंगी। ये तीनों सत्ताएं अनादि - अनंत काल से अपना अस्तित्व रखती आयी हैं और अनंत काल तक ऐसे ही विद्यमान रहने वाली हैं। उनका कभी भी अभाव होने वाला नहीं है। इसके अतिरिक्त, ये तीनों सत्ताएं एक में से दूसरी ऐसे परिवर्तित भी कभी नहीं होती हैं। अर्थात् ईश्वर कभी जीव या प्रकृति नहीं बनता है, जीव कभी ईश्वर या प्रकृति नहीं बनता है, और प्रकृति कभी ईश्वर या जीव नहीं बनती है। ये तीनों सत्ताएं अपने-अपने स्वाभाविक गुणों के आधार पर एक-दूसरे से सदैव भिन्न ही बनी रहती हैं कभी भी अभिन्न - समान - एक नहीं हो जातीं। ईश्वर और जीव चेतन हैं, जबकि प्रकृति जड़ है। ईश्वर जीवों के कल्याण के लिए - उनकों उन्नति का - मोक्ष-प्राप्ति का अवसर प्रदान करने के लिए प्रकृति में से सृष्टि बनाता है। यह सृष्टि आज पर्यंत अनंत बार बनी-बिगड़ी है, और भविष्य में भी अनंत बार बनने-बिगड़ने वाली है। सृष्टि-प्रलय का यह क्रम भी अनंत है।

५. वेदों में मनुष्य के चरम विकास एवं उन्नति के लिए अपेक्षित समस्त ज्ञान वर्णित है। वेदों में सर्व प्रकार का ज्ञान-विज्ञान निहित है। वेदों में ईश्वर-प्राप्ति अथवा मोक्ष-प्राप्ति को मानव जीवन का चरम लक्ष्य बताया गया है। वेदों का प्रधान विषय यही अध्यात्म विज्ञान है। वेदों में भौतिक जीवन के प्रति भी अनादर के भाव नहीं हैं, उसके उत्कर्ष के लिए भी पर्याप्त सामग्री वेदों में उपलब्ध है, फिर भी आध्यात्मिक ऐश्वर्य की तुलना में भौतिक ऐश्वर्य को गौण जरूर बताया गया है।

६. वेद जगत् को वास्तविक एवं सप्रयोजन मानते हैं। जगत् को स्वप्नवत् मिथ्या मानते हुए अपने शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अभ्युदय की प्राप्ति के लिए बिल्कुल कामना या यत्न ही न करना - इस प्रकार के निराशावादी चिंतन का वेदों में अभाव है। वेद हमें ज्ञान-कर्म-उपासनामय कर्मठ जीवन के पाठ पढ़ाते हैं।

७. वेदों में विशुद्ध एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया गया है। एक ही सच्चिदानंद - स्वरूप, सर्वव्यापक, निराकार, अनंत, सर्वशक्तिमान, चेतन ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का ज्ञान कराने के लिए वेदों में उसकी अनेकानेक नामों से स्तुति - यथार्थ वर्णन किया गया है। इसलिए वेदों में ईश्वर के लिए प्रयुक्त इन्द्र, वरुण, प्रजापति, सविता, विधाता, अग्नि, गणपति इत्यादि नामों को देखकर ऐसा निष्कर्ष निकाल लेना कि वेदों में तो अनेक ईश्वर की स्तुति है, वेदों तो बहुदेवतावादी हैं, एक गंभीर भूल ही मानी जाएगी। वेद एक ही ईश्वर की स्तुति- प्रार्थना-उपासना करने की शिक्षा देते हैं।

८. वेद मानवोपयोगी समस्त विद्याओं के मूल हैं। वेदों में मानव जीवन के सभी अंगो के विषय में - व्यष्टि एवं समष्टि दोनों के विषय में ज्ञान प्रस्तुत किया गया है। वेदों में भौतिक विज्ञान के रहस्य भी उपलब्ध हैं, परंतु वेदों में ये सब विद्याएं मूलवत् अर्थात् बीज या सूत्र रूप में वर्णित हैं। वेदों में किसी 'शास्त्र' के रूप में अमुक विद्या या विज्ञान-शाखा का सांगोपांग विस्तार या विशद विवेचन प्रस्तुत नहीं किया गया है। परंतु वेदों में से भौतिक जगत् विषयक संकेतों को ठीक से समझ कर उनके अवलंबन से सृष्टि का गहन वैज्ञानिक अध्ययन करके मनुष्य भौतिक जगत् की भी अनेक सच्चाइयों का अन्वेषण कर सकते हैं।

९. वेदों में यज्ञ, संस्कार आदि कर्मकांड का भी यथोचित वर्णन किया गया है। वेदों में वेदार्थ आधारित सार्थक एवं वैज्ञानिक कर्मकांड को समुचित स्थान दिया गया है। वेदों में 'यज्ञ' शब्द को अत्यंत विस्तृत अर्थ में प्रयुक्त किया गया है, जिसकी अर्थ-परिधि में उन सभी प्रकार के उत्तम कर्मों का समावेश हो जाता है, जो किसी सद्भावना से प्रेरित होकर किए जाते हैं और जिनके द्वारा सुखों की वृद्धि और दुःखो तथा क्लेशों का शमन होता हैं। फिर भी यह नहीं भूलना चाहिए वेद केवल द्रव्यमय यज्ञों या कर्मकांड के लिए ही प्रवृत्त नहीं हुए हैं। वेद ज्ञान के - सत्य विद्याओं के ग्रंथ हैं, ये याज्ञिक कर्मकांड के ही या मानवीय अनित्य इतिहास के ग्रंथ नहीं हैं। कर्मकांड में भी जो विनियोग होता है वह मंत्र के अर्थ के आधीन होना अपेक्षित है।

१०. वेद और सृष्टि दोनों ईश्वरीय हैं। जैसे वेद ईश्वर-प्रणीत हैं, ईश्वरीय ज्ञान के ग्रंथ हैं, वैसे ही यह सृष्टि अथवा जगत् भी वही ईश्वर द्वारा रचित एवं संचालित है। इसलिए इन दोनों में अर्थात् वेद तथा सृष्टि में अ-विरोध है, दोनों में पूरी संगति है, पक्का समन्वय है। सृष्टि विषयक जो बातें वेदों में वर्णित हैं, वही बातें हमें सृष्टि में उपस्थित व कार्यरत दिखाई पड़ती हैं। इसलिए वेद सर्वथा वैज्ञानिक हैं। वेदों में ऐसी एक भी बात नहीं है, जो सृष्टिक्रम के विरुद्ध हो या जिसका सृष्टि-विज्ञान से मेल न बैठता हो। इस तरह वेदों की रचना बुद्धिपूर्वक - ज्ञान-विज्ञानपूर्वक है, जो उनका ईश्वरीय होना सिद्ध करता है।

११. वेदों में मानव समाज का ब्राह्मण आदि चार वर्णों में विभाजन किया गया है, परंतु इस विभाजन का आधार व्यक्ति का जन्म नहीं, बल्कि उसके गुण-कर्म-स्वभाव हैं। जन्म आधारित जाति प्रथा न केवल वेदबाह्य है, बल्कि वेद-विरुद्ध भी है।

१२. वेदों को यथार्थ रूप में समझने के लिए ब्राह्मण-ग्रंथ, वेदांग, उपांग, उपवेद, प्रमुख - मौलिक उपनिषद् तथा मनुस्मृति आदि पुरातन वैदिक ग्रंथो का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। पाणिनि मुनि कृत अष्टाध्यायी, पतंजलि मुनि कृत महाभाष्य तथा यास्क मुनि कृत निरुक्त तथा निघंटु के अध्ययन से वेदों की भाषा तथा वेदों के अर्थ समझने में अनन्य सहायता प्राप्त हो सकती है।

१३. वेदों की शिक्षाएं - उपदेश सर्वथा उदात्त, सार्वभौम, सर्वजनोपयोगी और प्राणीमात्र के लिए हितकारी हैं। वेद मानवमात्र का ही नहीं, जीवमात्र का हित करने वाली बातों का उपदेश करते हैं। वेदों में जिसे संकीर्ण, एकांगी या सांप्रदायिक कहा जा सके ऐसा कुछ भी नहीं है। सभी का कल्याण और सर्वविध उन्नति कराने वाली सुभद्र बातों को प्रकाशित करने वाले वेद वैश्विक धर्म के प्रतिनिधि हैं। वेदों में उन समस्त विषयों का उल्लेख पाया जाता है, जिनका स्वीकार व आचरण कर कोई भी देश, समाज या व्यक्ति उन्नति के शिखर पर पहुंच सकता है और सभी लोग विश्व, देश, समाज या परिवार में सुख एवं शांतिपूर्वक रहकर जीवन व्यतीत कर सकते हैं। मनुष्यों को आज पर्यंत जिन-जिन सत्य विद्याओं की आवश्यता अनुभव हुई है और भविष्य में उन्हें जिन-जिन सत्य विद्याओं की आवश्यकता अनुभव होगी, उन सब सत्य विद्याओं का बीज रूप में समावेश वेदों में हुआ है।

१४. वेद ईश्वरीय ज्ञान है। अतः उन पर मानवमात्र का समान मौलिक अधिकार है। किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह अन्य किसी को उसके वेदाधिकार से वंचित कर सके।

१५. मनुष्य के आत्मा में अपना जीवस्थ स्वाभाविक ज्ञान तो होता ही है, परंतु वह इतना अल्प होता है कि केवल उससे वह उन्नति नहीं कर सकता है। उन्नति तो होती है - नैमित्तिक ज्ञान से जिसे अर्जित या प्राप्त किया जाता है। वेद ईश्वर-प्रदत्त नैमित्तिक ज्ञान है। वह सर्वज्ञ ईश्वर का ज्ञान होने से निर्भ्रांत है और इसीलिए 'परम-प्रमाण' अथवा 'स्वतः-प्रमाण' है। वह सूर्य अथवा प्रदीप के समान स्वयं प्रमाणरूप है। उसके प्रमाण होने के लिए अन्य ग्रंथों की अपेक्षा नहीं होती है। चार वेदों के अतिरिक्त समस्त वैदिक अथवा वेदानुकूल साहित्य अति महत्त्वपूर्ण होते हुए भी मानवीय - पौरुषेय होने के कारण परत-प्रमाण है। इन ग्रंथों में जो कुछ वेदानुकूल है वह प्रमाण और ग्राह्य है, और जो कुछ वेदविरुद्ध है वह अप्रमाण और अग्राह्य है।

१६. वेदों के समस्त शब्द यौगिक या योगरूढ हैं, इसलिए वे आख्यातज हैं, रूढ या यदृच्छारूप नहीं हैं। इसलिए वैदिक शब्दों का तात्पर्य जानने के लिए व्याकरणशास्त्र के अनुसार यथायोग्य धातु-प्रत्यय संबंध पूर्वक अर्थ समझने का प्रयत्न करना चाहिए। धातुएं अनेकार्थक होने से मंत्र भी अनेकार्थक होते हैं और उनके आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक अर्थ किए जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में - प्रकरण आदि का विचार करके वेदमंत्रों के पारमार्थिक तथा व्यावहारिक दोनों प्रकार के अर्थ करने का प्रयास करना चाहिए।

१७. पिछली दो शताब्दियों में पश्चिम के अनेक विद्वानों ने वेदों पर कार्य किया है और तत्संबंधी ग्रंथ आदि भी लिखे हैं, जिनमें मेक्समूलर, मोनियर विलियम्स, ग्रिफिथ इत्यादि के नाम प्रसिद्ध हैं। ये पाश्चात्य विद्वान् वेदों को वास्तविक रूप में प्रस्तुत नहीं कर सके हैं, क्योंकि एक तो वे वेद तथा वेदार्थ की पुरातन आर्ष परंपरा से अपरिचित थे और दूसरा यह कि वे लोग अपने ईसाई मत के प्रति आग्रह रखते थे और विकासवाद को अंतिम सत्य मानकर चलते थे। इसलिए पाश्चात्यों का वेद विषयक कार्य प्रायः वेदों की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने वाला ही सिद्ध हुआ है। इसी प्रकार सायण, महीधर आदि मध्ययुगीन भारतीय पंडित भी अपनी कुछ गंभीर मिथ्या धारणाओं के कारण वेदों को यथार्थ रूप में व्याख्यायित करने में असफल रहे हैं।

१८. वेदों में सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा रखने की प्रेरणा दी गई है। वेद हमें विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करने के लिए तथा वैज्ञानिक चिंतन को जाग्रत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अद्वैतवाद, पयगंबरवाद, मृतक-श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्म आधारित जातिप्रथा, चमत्कारवाद, नास्तिकवाद इत्यादि वेदविरुद्ध होने से खंडनीय एवं त्याज्य हैं।

स्वामी दयानन्द के वेद सम्बंधित दृष्टकोंण को जानने के लिए स्वामी जी कृत ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका अवश्य पढ़िए।

●●●

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र ३० जनवरी, २०२५ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

अरब के महान कवि द्वारा वेदों का गुणगान

(Admiration of VEDAS, by Great Arabic poet Labee, 3745 years ago, in Arabic poem] is as follows)

हजरत मोहम्मद साहब का जन्म सोमवार ५ अप्रैल ५७१ ईस्वी (आज से १४४५ वर्ष पूर्व) को, सऊदी अरब के मक्का में हुआ था।

मोहम्मद के जन्म से २३०० वर्ष पूर्व अर्थात् आज से ३७४५ वर्ष पूर्व (=१७०० BCE) ''लबी बिन अख्तर बिन तुरफा'' अर्थात् तुरफा के पुत्र अख्तर, अख्तर के पुत्र लबी नामक अरब के महान कवि ने वेदों का गुणगान अरबी भाषा की निम्नलिखित कविता में कियाः

१) अय मुबारकल अर्ज यू श शर्रअ यू नूहामिनल, हिन्द ए फराद कल्लहो मयानज्जे लाजिकातुन

पदार्थः (अय) हे (मुबारकल) धन्य, (अर्ज यू) सन्देश, (शर्रअ यू) धर्मशास्त्रीय, (नूहामिनल) प्रशस्ति(आदर) करने योग्य, (हिन्दे) भारत के, (फराद) केवल, (कल्लहो) सत्य मार्गदर्शक, (मयानज्जे) अमृतमय, (लाजिकातुन) प्रकाशपुन्ज.

भावार्थः हे भारत की पुण्यभूमि तू धन्य है, क्योंकि तुझमें ही ईश्वर ने अपने सत्यज्ञान का अमृतमय प्रकाश किया.

Meaning: O blessed land of Bhaarat] thou art worthy reverence for in thee has GOD illuminated true knowledge of himself-

२) वहल तजल्लीयातुन एनाने सहाबी अरावतुन, हाजा यूनज्जेलो रसूलो जीकतान मिनल हिन्दतुन।

पदार्थः (वहल) ध्यान देने योग्य, (तजल्लीयातुन) प्रकाश-पुन्ज, (एनाने) वास्तविक, (सहाबी) मैत्रीपूर्ण, (अरावतुन) मार्गदर्शक, (हाजा) पवित्र, (यूनज्जेलो) परमात्मा, (रसूलो) ऋषि, (जीकतान) पात्र, (मिनल) से, (हिन्दतुन) भारत से।

भावार्थः ईश्वरीय ज्ञानस्वरुप ये चारों पुस्तकें (वेद), जो हमारे मानसिक नेत्रों को, किस आकर्षक और ऊषा की ज्योति को देते हैं। परमेश्वर ने भारत में अपने पैगम्बरों (ऋषियों), के हृदयों में इन चारों वेदों के प्रकाश किया।

Meaning: What a pure light do these four revealed books afford to our mind^s eyes like the (charming and cool) lustre of the dawn \These four Vedas] GOD revealed unto his prophets (Rishis) in Bhaarat-

३) यकूलुनल्लाह या अहलल अर्ज यू आलमीन कुल्लहुम, फतवे आजिकातूल वेद हक्कन मालम युनज्जेलो लहुम।

पदार्थः (यकूलुन) अनुपम, (अल्लाह) ईश्वर, (या) हे, (अहलल) अत्यन्त मधुर, (अर्ज यू) उपदेश, (आलमीन) विश्व के लिए, (कुल्लहुम) सबके लिए, (फतवे) धार्मिक सन्देश, (आजिकातूल) प्रकाशमय, (वेद) वेद, (हक्कन) वास्तविक, (युनज्जेलो) परमात्मा, (लहुम) प्रकाशित करता है।

भावार्थः पृथ्वी पर रहने वाले, सभी मनुष्यों को ईश्वर उपदेश करता है, की मैंने वेदों में जिस ज्ञान को प्रकाशित किया है, उसको तुम अपने जीवन में क्रियान्वित करो. उसके अनुसार आचरण करो, निश्चित रूप से ईश्वर ने ही वेदों का ज्ञान दिया है।

Meaning: And GOD thus teaches all races of mankind that inhabit the earth that, Observe (in your lives) the knowledge I have revealed in the Vedas, for surely GOD has illuminated them-

४) बहोव आलम उस्साम वल यजुर मिनल्लहे तनजीलन, फ ऐनमा युर्वी यो मुत्तबे अन यो ब मरेयो नजातुन्।

पदार्थः (बहोव आलम) संसार को ईश्वर भली-भांति जानता है, (उस्साम) सामवेद, (वल यजुर) यजुर्वेद, (मिनल्लहे) अल्लाह की ओर से, (तनजीलन) अवतरित हुए, (फ ऐनमा) जहाँ कहीं भी, (युर्वी) अरब के, (यो मुत्तबे) जो भक्त, (अन यो) से जो, (ब मरेयो) मरणधर्मा, (नजातुन्) मुक्तिप्रद।

भावार्थः सामवेद और यजुर्वेद वे खजाने (कोष) हैं, जिन्हें परमेश्वर ने दिया है. ऐ मेरे भाइयों तुम इनका आदर करो, क्योंकि ये मुक्ति का समाचार देते हैं.

Meaning: Those tresures are SaamVeda and Yajur Veda which GOD has illuminated- O my Brothers! revere these, for they tell us the good news of salvation-

५) व अस्नैने इयारिक व अतरना सहीनक अखूबतुन, व अस्नात अला अदन वहोव अश्र अखुन।

पदार्थः (व अस्नैने) और उज्जवल प्रकाशपूर्ण, (इया) विशेषकर, (रिक) ऋग्वेद, (व अतरना) और अथर्ववेद, (सहीनक) ठीक, (अखूबतुन) भ्रातृत्व, (व अस्नात) और उज्जवल, (अला) सम्मान, (अदन) स्वर्ग, (बहोव) वह परमात्मा, (अश्र) गुण, (अखुन) भ्रातृत्व।

भावार्थः इन चारों में से ऋग्वेद और अथर्ववेद हमें विश्व भ्रातृत्व का पाठ पढ़ाते हैं. ये वो ज्योति-स्तम्भ हैं, जो हमें उस लक्ष्य की ओर अपना मुख मोड़ने की चेतावनी देते हैं.

Meaning: The two net of these four Vedas, Rig and Atharva teach us lessons of universal brotherhood- These two (Vedas) are the beacons that warn us to turn towards that goal (Universal Brotherhood)-

वेदों से सम्बन्धित यह मूल अरबी कविता बगदाद के अब्बासी वंश के प्रसिद्ध खलीफा ''हारून-अल-रशीद'' (७८६ ईस्वी से ८०६ ईस्वी) के दरबार में बगदाद के प्रसिद्ध

कवि (मलिकुश्शोरा) ''अस्मई'' द्वारा पढ़ी गई थी। यह अरबी काव्य-संग्रह ''सीरुलउकूल'' नाम से पुस्तक रूप में West Publishing Company "West Palaestine" ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक भारत में ''हाजी हमजा शीराजी एन्ड को.'' पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, बान्द्रा रोड, मुम्बई से उपलब्ध है. यह कविता सीरुलउकूल के पृष्ठ संख्या-११८ पर है.

साभारः १) अरब में इस्लाम (स्वामी आत्मानन्द तीर्थ)

२) वेदों का यथार्थ स्वरुप (पण्डित धर्मदेव विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड)

नहीं रहे ऋषिभक्त सत्यपाल सरल

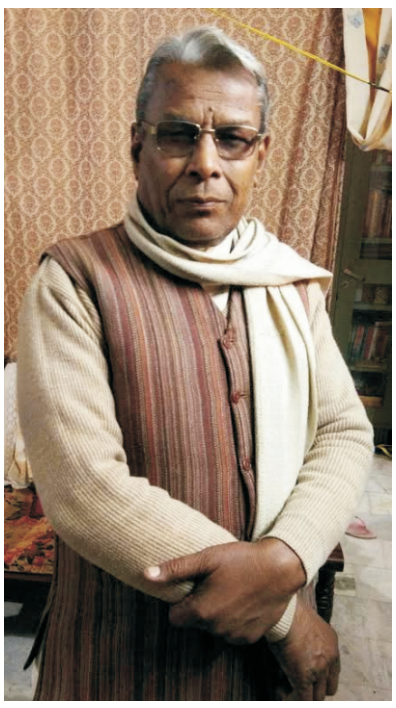

आर्य जगत के प्रभावशाली भजनोपदेशक ऋषि भक्त व वैदिक विद्वान श्री सत्यपाल सरल का लम्बी बीमारी के पश्चात ७८ वर्ष की आयु में २७ जनवरी, २०२५ को सायं देहरादून के इन्द्रेश अस्पताल में देहान्त हो गया। स्व. सत्यपाल जी काफी समय से लिवर कैंसर के रोग से ग्रसित थे। काफी उपचार के पश्चात् भी उनको बचाया नही जा सका, ईश्वर की इच्छा के आगे हम सभी विवश व लाचार हैं।

स्व. सत्यपाल सरल की अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से भण्डारी बाग के लक्खी बाग शमशान घाट देहरादून में दिनांक २८ जनवरी, २०२५ को गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारीगणों ने आचार्य पं. चन्द्रभूषण शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न कराया। जिसमें पारिवारिक सदस्यों, मित्रों, आर्यजनों व आर्य समाज आदि के सैकड़ों पदाधिकारियों ने नम आँखों से अन्तिम विदाई दी। स्व. सत्यपाल जी अपना भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं जिसमें उनकी धर्मपत्नी व दो पुत्र हैं।

स्व. सत्यपाल सरल की मृत्यु पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा व उनके सहयोगी पदाधिकारी जन अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, कीर्ति शेष सत्यपाल जी की क्षतिपूर्ति असम्भव है, ईश्वर परिजनों को संयम रूपी शक्ति प्रदान करें।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।